म्यूरल पेंटिंग

संदीप पूरी*

म्यूरल पेंटिंग भिति चित्रण की एक प्राचीन विद्या है जिसके खूब परम्परागत रूप विद्यमान है तथा भारत में भी यह विधि जयपूर अरायश व टेम्परा के नाम से जानी जाती है। म्यूरल पेंटिग के सबसे प्राचीन उदाहरण स्पेन की अल्ताभिरा गुफा से प्राप्त हैं जबकि भारत में म्यूरल पेंटिग के सबसे प्राचीन साक्ष्य अजंता व बाघ गुफा में विद्यमान हैं।

म्यूरल पेंटिंग के प्रकार

फ्रेस्को ब्यूनो - यह इटली की भिति चित्र तकनीक है जिसके प्राचीन साक्ष्य हमें नासोस (यूनान) से प्राप्त हुआ है। इस तकनीक के अंर्तगत चूना पत्थर व बालू मिलाकर कई महीनो पहले भित्ति तैयार की जाती है। तथा इसके बाद इसके सूखने पर शंख चूर्ण व चूना पत्थर का लेप लगाया जाता है यह लेप उतने ही धरातल पर लगाया जाता है जितने पर चित्रण का काम पूरा किया जा सके क्योंकि इस विद्या की विशेषता यह है कि इसमें चित्रण गीली भिति पर ही किया जाता है। ये चित्र अधिक टिकाऊ होते है।

फ्रेस्को सेको - यह मिति चित्रण की तकनीक फ्रेस्को ब्यूनो की भाँति ही होती है। बस अंतर इतना होता है कि इसमें धरातल सूखा रखा जाता है यह फ्रेस्को ब्यूनो की अपेक्षा में इसके चित्र ज्यादा लम्बे समय तक नहीं सकते।

जयपुर फ्रेस्को - यह भारत में प्रचलित फ्रेस्को ब्यूनो (इटली) की भाँति तकनीक होती है। जो वर्तमान में सिखाई जाती है। इस के लिए सितम्बर से मार्च का समय उचित माना जाता है। इसे अरायश पद्धति के नाम से भी जाना जाता है।

टेम्परा ग्लू तकनीक - भिति चित्रण की इस तकनीक में पायस के रूप में अण्डे की जर्दी या सरेस रंगों में मिलाकर प्रयोग लाया जाता है तथा भिति को तैयार करते समय सुधा लेप लगाया जाता है।